साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

सामाजिक चिन्तन और निराला

डॉ० मिन्तु
असि0 प्रो0 हिन्दी
कु0मा0रा0स्ना0 महा0 बादलपुर

शोध सारांश

''जिन असाधारण प्रतिभावान एवं अपने युग से आगे देखने वाले साहित्यकारों ने भारतीय साहित्य को अपनी अमूल्य रचनाओं से अलंकृत किया है निराला उन रचनाकारों में सबसे अग्रिम पंक्ति के रचनाकार हैं। निराला का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त ही प्रतिकूल परिस्थितियों का शिकार रहा। जीवन की दृष्टि से यह कहा जाए तो ज्यादा उपयुक्त होगा कि निराला जी किसी दुर्लभ सीप में ढले हुए मोती नहीं है जिसे अपनी प्रतिष्ठा के लिए स्वर्ण का साथ तथा सौंदर्य निरूपण के लिए किसी अलंकार के रूप की आवश्यकता है। निराला तो अनगढ़ पारस के विशाल शिलाखंड है। निराला ने सामाजिक स्वरूप को एक पृथक रूप में देखा। उन्होंने सामाजिक समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से उभारा और साथ ही उसका समाधान भी समाज के सामने प्रस्तुत किया। निराला जी यह मानते थे कि भावी भारत में वर्ण व्यवस्था का अर्थ मात्र कर्म का विभाजन होगा, पद की उच्चता का नहीं। मूलतः निराला वर्ण व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्तन लाने के इच्छुक थे उसे समूल नष्ट करने के नहीं।''

कोई भी साहित्यकार कभी किसी देश, जाति या समुदाय का नहीं होता। वह अपने साहित्य के माध्यम से अखिल विश्व की मानवता का प्रतिनिधित्व करता है और इस समग्रता का उदय उसके जीवन की शुरूआत से ही हो जाता है। जीवन के अनन्त संघर्षों को पार कर जब वह अपने भाव जगत में डूब जाता है तब उत्पन्न होता है मानव मन को झकझोर देने वाला काव्य। ऐसा साहित्य युगों-युगों तक असंख्य मानव समुदाय के लिए स्रोत बन जाता है परन्तु इस प्रेरणा के पीछे होती है उसकी अनगिनत आहें, उसकी अनन्त व्यथा जिसे अपने आप में छिपाए वह अपने जीवन की यात्रा पूरी करता है। निराला की जीवन कथा भी उन्हीं संघर्षों